

## UP Board Notes Class 7 Hindi Chapter 7 महाराजा अग्रसेन (महान व्यक्तित्व)

---

### पाठ का सारांश

धनपाल नामक राजा ने सरस्वती नदी के किनारे प्रतापनगर राज्य स्थापित किया। धनपाल की छठी पीढ़ी में महाराजा बल्लभ हुए, जिनके अग्रसेन और शूरसेन नामक पुत्र थे। अग्रसेन का विवाह माधवी से हुआ। इसके अलावा महाराज अग्रसेन ने कोलापुर के नागवंशी महाराज महीरथ की पुत्री सुन्दरावती के साथ विवाह किया। दोनों पत्नियों- माधवी और सुन्दरावती के पिता कुमुद और महीरथ ने अग्रसेन की सहायता की, जिससे इनका राज्य समृद्धिशाली हो गया। दो नागवंशों से सम्बन्ध हो जाने पर यह स्वाभाविक ही था। इनकी प्रजा भी सन्तुष्ट थी। इन्होंने अपने भाई शूरसेन के विवाह पर इन्द्र को आमंत्रित कर उनसे मैत्री सम्बन्ध स्थापित कर लिए। महाराजा बल्लभ की मृत्यु के बाद अग्रसेन अनेक तीर्थस्थानों पर गए। अग्रसेन ने पंचनद (पंजाब) में नए राज्य की स्थापना की और आग्नेयगण (अग्रोहा) नगर बसाया। शूरसेन प्रतापनगर के राजा बने। अग्रसेन ने अट्टारह बस्तियाँ बसाईं। 'जीयो और जीने दो' इनकी राजनीति का आधार था। इनके राज्य में हिंसा और दुर्नीति के लिए कोई स्थान नहीं था। अग्रसेन की सन्तानों में राजकुमार विभु सबसे बड़े थे। सन्तान होने की खुशी में अग्रसेन ने अश्वमेध यज्ञ किया; लेकिन पशुबलि नहीं होने दी। उसके स्थान पर नारियल को ही यज्ञ की पूर्णाहुति का साधन बनाया। अपने राज्य में कहीं भी होने वाली पशुबलि इन्होंने रुकवा दी। इनके राज्य में प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे की मदद और सहयोग करने वाला था। नवागंतुक व्यक्ति की भी लोग आवास और भरण-पोषण में मदद करते थे। अग्रसेन ने जनपदों में जन-प्रतिनिधियों की नई व्यवस्था को जन्म दिया। एक लम्बी अवधि तक राज करके अपने पुत्र विभु को शासन सौंप दोनों महारानियों सहित इन्होंने वनवास ग्रहण कर लिया।